Indian J. Soc & Pol. 03(01): 2016 :121-122 **ISSN 2348-0084(P)**
ISSN 2455-2127(O)

जनपद फैजाबाद का ऐतिहासिक परिचय : नवाबी शासनकाल में

तबस्सुम फातिमा[1]
[1]प्रवक्ता, मध्यकालीन इतिहास,मोहम्मद हसन, पी०जी० कालेज जौनपुर उत्तर–प्रदेश

ABSTRACT

प्रस्तुत लघु शोध पत्र 'जनपद फैजाबाद का ऐतिहासिक परिचय : नवाबी शासन काल में' ऐतिहासिक परम्परा की अभिवृद्धि में मेरा एक लघु प्रयास है। जनपद फैजाबाद एक ऐसे क्षेत्र और एक ऐसे सांस्कृतिक प्रदेश का नाम है जो अपनी भाषा, संस्कृति तथा इतिहास के लिए सदैव ही सुविख्यात रहा है। वर्तमान समय में नेपाल की सीमा एवं गंगा नदी के मध्य उत्तर प्रदेश के बारह पूर्वोत्तर जनपदों में जनपद फैजाबाद का गौरवपूर्ण इतिहास रहा है। रघुवंशी साम्राज्य से लेकर नवाबी शासन एवं स्वतंत्रता संग्राम तक जनपद फैजाबाद की सीमाएं समय–समय पर परिवर्तित होती रही है। वर्तमान समय में फैजाबाद अक्षांश 26° 11 से 26° 49 तथा पूर्वी देशान्तर 31° 44 से 83° 4 के मध्य स्थित है। जनपद फैजाबाद का एक धार्मिक स्थल के रूप में भी अत्यधिक महत्व रहा है। फैजाबाद नवाबी शासनकाल में अपनी राजनीति के लिए सुविख्यात रहा है। जोकि उतार–चढ़ाव की घटनाओं से परिपूर्ण है।

KEYWORDS: *फैजाबाद, नबाबी शासनकाल, अवध*

मीर मोहम्मद अमीर अवध के नवाबी शासन का संस्थापक था (फैजावाद गजेटियर,1960 पृ093) एक स्वतंत्र प्रशासनिक इकाई के रूप में अवध (अयोध्या) का प्रादुर्भाव सआदत खाँ बुरहानमुल्क के समय में हुआ। सआदत खाँ निशापुर का रहने वाला था। 1708–1709 ई० मे वह नौकरी की खोज में भारत आया। सन 1710 ई० में उसने कड़ा और मानिकपुर के फौजदार सर बुलन्द खाँ के यहाँ नौकरी कर ली किन्तु बाद में कुछ मतभेदों के कारण उसने त्याग पत्र दे दिया। सन 1711 ई० में वह बादशाह फरूखसियर की नौकरी में भर्ती हो गया। सैय्यद बन्धुओं को पराजित करने में उसने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। अतः उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर सआदत खां बहादुर की उपाधि से विभूषित किया गया तथा उसे आगरा का सूबेदार भी नियुक्त किया गया।(रामसहाय,1869 पृ033–34)

उस समय अवध की सूबेदारी गिरधर बहादुर नागर के अधीन थी। उनमें योग्य प्रशासक के गुण नहीं थे। उनका अधिकांश समय दिल्ली में बीतता था। अतः अवध प्रान्त में राजाओं तथा जमींदारों का प्रभुत्व इतना अधिक बढ़ गया था कि उनका दमन करने में वह पूर्णतः असमर्थ सिद्घ हुआ। इस कारण अवध की जनता लूटपाट एवम जमींदारों के आतंक से भयभीत थी। अवध की वार्षिक आय भी कम हो गयी थी।(गनी,1913,पृ026)सन 1722 ई० में मुगल सम्राट मुहम्मदशाह ने अवध को अराजकता पर नियन्त्रण एवं सुदृढ़ शासन व्यवस्था स्थापित करने हेतु सआदत खाँ को अवध का सूबेदार नियुक्त किया गया। अतः उन्हे आगरा से अवध स्थानान्तरित कर दिया गया।(खान,1952,पृ0426) वस्तुतः अवध (अयोध्या) के नवाबी वंश की स्थापना सआदत खाँ ने की थी। इस समय सूबे में शक्तिशाली जमींदार तथा राजा स्वतंत्र रूप से रहे थे। इसके साथ उनकी सेना तथा किले थे। इस प्रकार अद्र्घ स्वतंत्र हुए इन शक्तिशाली जमींदारों तथा राजाओं का दमन सआदत खाँ ने किया। उसने सरदारों को अपने अधिकार में लिया।

इस प्रकार उसकी शक्ति और ख्याति और अधिक बढ़ गई।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ053–54) 1723 ई० के प्रारम्भ में तिलोई के राजा मोहन सिंह को पराजित कर उसके द्वारा छीने गए परगनों को वापस प्राप्त कर लिया। उसके बनारस, जौनपुर तथा बलिया की सरकारों पर अधिकार कर अयोध्या की सीमा को पूर्णतः विस्तार किया।(गनी,1913 पृ026) अवध में पूर्ण शान्ति व्यवस्थाा स्थापित करने तथा उसकी आय में वृद्घि होने के परिणामस्वरूप सम्राट ने उसे मीर मुहम्मद अमीन सआदत खाँ 'बुरहानमुल्क' की उपाधि प्रदान की।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ054)

1725 ई० में सआदत खाँ ने अवध क्षेत्र में रहने वाले वैश्य और विसेन क्षत्रियों का दमन किया। अतः उसकी शक्ति और प्रतिष्ठा काफी बढ़ गई। इस समय तक फैजाबाद नामक नगर का कहीं पता नही था। घाघरा नदी के किनारे एक चौड़ा केवड़ा वन था जहाँ पर नवाब अपना खेमा डालते थे और कुछ दिनों के लिए सैनिक छावनी भी रखते थे। वे वहां एक बंगला बनाकर चहारदीवारी से घेर दिया था, जिससे वह एक किले की तरह हो जाता था। इसी चहारदीवारी के अन्दर अश्वरोही, सेना, पैदल सेना तथा लड़ाई के हथियार सुरक्षित रखे जाते थे। ये भवन मिट्टी के बनाए जाते थे क्योंकि थोड़े दिनों के लिए ही होते थे।(गनी,1913,पृ026) तब इसे फैजाबाद न कहकर श्बंगलाच्य कहते थे जो कालानतर में फैजाबाद के नाम से विकसित हुआ।(होय,1989 पृ04–5)

1739 ई० में सआदत खाँ की मृत्यु हो गई। इसके स्वतंन्त्र स्थान पर उसका भान्जा तथा दामाद मिर्जा मुहम्मद मुकीम अबुल मंसूर खाँ सफदरगंजच्य नियुक्ति किया गया। वह सआदत खाँ की अनुपस्थित में पहले से ही सूबे का शासन प्रबन्ध सम्भाल रहा था। उसने नादिरशाह को दो करोड़ रूपये दिया। जिसके फलस्वरूप सम्राट मुहम्मदशाह ने उसे स्थायी रूप से अवध का सूबेदार बना दिया। इसके अतिरिक्त वह मीर आतिश भी नियुक्त किया गया तथा निजामुलमुल्क की मृत्यु के पश्चात साम्राज्य का वजीर बना दिया गया।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ055) सफदरगंज ही वास्तव में फैजाबाद नगर का वास्तविक संस्थापक था।(होय,1989,पृ04–5) इसके समय में

1: Corresponding Author

दीवान आत्माराम के पुत्रों ने सआदत खाँ द्वारा निर्मित बंगला के पश्चिम फाटक के पास एक मुहल्ला बसाया, जो दिल्ली दरवाजा कहलाया। उसके रिसालदार इस्माइल खाँ ने एक बाजार इस्माइलगंज बनवाई जो अब नष्ट हो गई है।

सफदरगंज के समय में अयोध्या के दिन फिर गए। उसके कृपापात्र दीवान नवलराय ने अयोध्या में नागेश्वर नाथ महादेव तथा लक्ष्मण जी के मन्दिरों का निर्माण कराया।(अवधवासी,1932 पृ0157) 13 अगस्त 1750 ई० को नवल राय फर्रूखाबाद के नवाब अहमद खाँ की सेना के साथ हुए संघर्ष में मारा गया। अपनी मृत्यु के कुछ दिन पूर्व सफदरगंज सम्राट का कृपापात्र नही रह गया था। अतः वह वजीर पद से हटा दिया गया। 5 अक्टूबर 1754 ई० को सफदरगंज की कैन्सर से मृत्यु हो गई। अयोध्या का राज्य, शासन की दृष्टि से, अब एक पूर्ण स्वतंत्र हो चुका था। यद्यपि इस वंश के संस्थापक और उसके उत्तराधिकारी नवाब मुगल सम्राट की परम्परागत अधीनता स्वीकार करते रहे।(चन्द,1971,पृ002)

15 फरवरी 1762 ई० को शुजाउद्दौला सम्राट का वजीर नियुक्त हुआ। वह फैजाबाद में अपने राज्य की व्यवस्था की तथा अपने पिता की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त कर लिया।(गनी,1913 पृ0 153) 23 अक्टूबर 1764 ई० को सर्वप्रथम बक्सर के युद्घ में सम्राट शाह आलम द्वितीय तथा नवाब वजीर शुजाउद्दौला की सम्मिलित सेनाओं की पराजय के पश्चात अवध में नवाबों का ईस्ट इण्डिया कम्पनी के साथ सम्पर्क हुआ।(चन्द ,पृ049)

16 अगस्त 1765 ई० को ईस्ट इण्डिया कम्पनी तथा शुजाउद्दौला के बीच एक संधि हुई। बक्सर के युद्घ में कम्पनी का धन खर्च हुआ उसके लिए शुजाउद्दौला ने 50 लाख रूपए कम्पनी सरकार को प्रदान की, जिसमें 25 लाख रूपये नकद होना चाहिए, शेष 25 लाख रूपये सलाना कर किश्तों में जमा किया जाय। (लाल,1982) 1765 ई० के बाद वह स्थायी रूप से फैजाबाद में अपना अन्तिम निवास स्थान निर्माण करवाया। वह फैजाबाद को सुन्दर एवम आकर्षक रूप प्रदान करने के लिए हर सम्भव प्रयास किया तथा फैजाबाद को अवध को अपनी नयी राजधानी स्थापित की।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ056)

शुजाउद्दौला ने सआदत खाँ के पुराने किलों का नवीनीकरण कराया तथा 1772 ई० में नगर कोटे (दीवाल) का कार्य पूरा कराया। शुलाउद्दौला के समय में फैजाबाद इतना समृद्घि तथा खुशहाल था कि ऐसी स्थिति इस नगर में फिर कभी नहीं गई। ईरान, तूरान, चीन तथा यूरोप के व्यापारी बहुधा कीमती सामान लेकर इस नगर में आते थे और उनका माल वहाँ के धनी व्यक्ति अच्छा मुनाफा देकर खरीद लेते थे।(होय,1989 पृ08) इस समय दैनिक आवश्यकताओं की वस्तुएं प्रचुर मात्रा में तथा बहुत सस्ती मिलती थी।(फ्रेंकलिन,1960,पृ057)

जनवरी, 1773 ई० में उसने फैजाबाद में नए किलों का निर्माण प्रारम्भ किया। उसने साथ ही एक विशाल राजा चौक बाजार की स्थापना की। उसने नगर के अन्दर त्रिपोलिया गेट तथा नगर प्रकोटे के अन्दर अंगूरी बाग, मोती बाग, लाल बाग, तथा नगर के पश्चित ऐशबाग एवं बुलन्द बाग भी बनवाए। शुजाउद्दौला ने अपनी सेना को यूरोपीय ढंग से व्यवस्थित करने के लिए विशेष ध्यान दिया।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ057) शुजाउद्दौला ने फैजाबाद में एक शस्त्र निर्माणशाला की स्थापना की जहाँ पर्याप्त मात्रा में अस्त्र–शस्त्रों का निर्माण होता था।(श्रीवास्तव,पृ0 34–40)

दिल्ली आगरा आदि स्थानों के अनेक व्यापारी, शासन, तमाशाबीन, शिल्पी, प्रत्येक वर्ग तथा प्रत्येक श्रेणी के लोग आ–आकर फैजाबाद में एकत्र होने लगे। कुछ ही दिनों में फैजाबाद का महत्व इतना अधिक बढ़ गया कि वह आगरा और दिल्ली से तुलना करने लगे।(गनी,1913,पृ0275–278) 26 जनवरी 1775 ई० को शुजाउद्दौला की मृत्यु हो गयी। वह अपने वंश का प्रथम शासक था, जिसकी समाधि गुलाबबाड़ी फैजाबादी में बनी।(हैदर,1907,पृ091)

उसके पुत्र आसफुद्दौला के नवाब होते ही अवध की राजनीति में महान परिवर्तन हुआ। अवध के शासन की बागडोर सम्भालते ही वह अपनी माँ बहू बेगम से नाराज होकर यहाँ से चला गया तथा वहाँ अपनी राजधानी भी फैजाबाद से लखनऊ स्थानान्तरित कर ली।(होय,1989 पृ0291) इस परिवर्तन के पश्चात फैजाबाद के महत्व को बहू बेगम ने अपने जीवन पर्यन्त बनाए रखा। बहू बेगम एक योग्य एवम प्रतिष्ठत महिला थीं। 1815 ई० में बहू बेगम की मृत्यु हो गई। उसके बाद फैजाबाद धीरे–धीरे अवनति की ओर जाने लगा। अब यह नाजिम का मुख्यालय भी नहीं रह गया था जो यहाँ से हटाकर सुल्तानपुर कर दिया गया।(फैजावाद गजेटियर,1960 पृ063)

इस प्रकार नवाबी शासनकाल में जनपद फैजाबाद का इतिहास उतार–चढ़ाव भरा रहा किन्तु इस उतार–चढ़ाव के पश्चात भी जनपद के महत्व में किसी भी प्रकार की कोई कमीं नहीं आयी। बल्कि नवाबों ने अपने शासन काल में विश्व प्रसिद्घ सभ्यता और संस्कृति का ही विकास किया।

सन्दर्भ

खान, शाहनवाजः *मवासिर उल उमरा,* भाग–एक, कलकत्ता, 1952,

होय, विलियम : *मेम्वायर्स आफ फैजाबाद,* इलाहाबाद, 1989

हैदर,कमालुद्दीनः *स्वानिहात्द्ध–ए–सलातीन,अवध,*
कैसर–उत–तवारीख, लखनऊ, 1907,

श्रीवास्तव, आर्शीवादी लाल : *शुजाउद्दौला,* भाग–दो

चन्द तारा : *हिस्ट्री आफ फ्रीडम मूवमेन्ट इन इण्डिया,* भाग–2,

चन्द टी०पी० : *दि एडमिशनस्ट्रियस आफ अवध,* वाराणसी, 1971

फ्रेंकलिन,डब्लू : *दि हिस्ट्रीआफ दि रेन आफ दि शाह आलम,*
लन्दन, 1798

फैजाबाद गजेटियर, 1960

तमन्ना मुन्शी रामसहाय : *अफजल उल तवारीख,* लखनऊ, 1879,

अवधवासी, लाला सीतारामः *अयोध्या का इतिहास,* प्रयाग, 1932

गनी, मुहम्मद नजमुल खाँ : *तारीख–ए–अवध,* भाग–दो,
मुरादाबाद, 1913

लाल, सुन्दर : *भारत में अंग्रेजी राज्य,* भाग–एक सूचना एवं
प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 1882